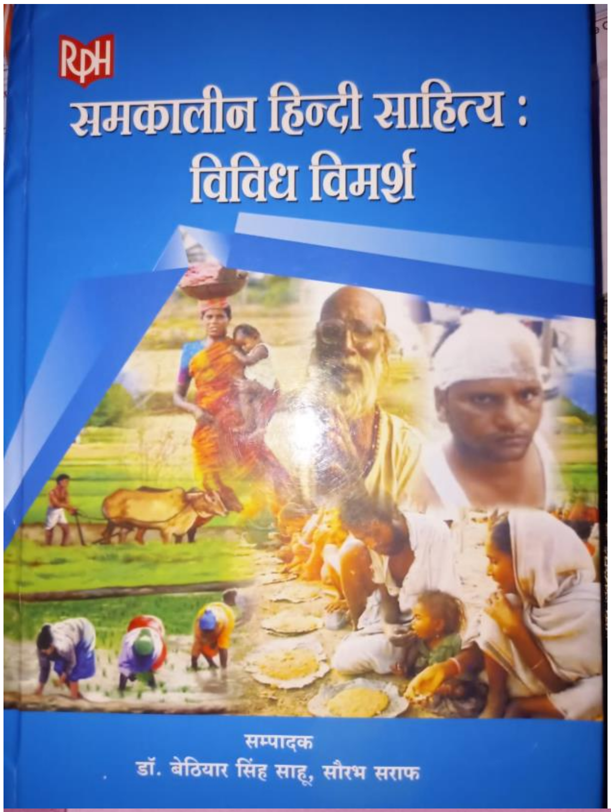

12.	कबीर और दलित चेतना **संग्राम सिंह निराला, डॉ. बलजीत कौर**	70
13.	दलित दास्तान **लोकेश कुमार वर्मा**	77
14.	चंद्रकांत देवताले की कविताओं में स्त्री **महिताप सिंह धुर्वे**	83
15.	हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय चिन्तन **आशुतोष सिंह**	89
16.	आधुनिक हिन्दी कहानियों में वृद्ध–जीवन की पीड़ा **डॉ. श्रीमती रवीन्द्र चौबे**	96
17.	गोविन्द मिश्र के साहित्य में पर्यावरणीय संवेदना **डॉ. रत्ना कुशवाह**	102
18.	हरिजन गाथा : दलित अस्मिता की पड़ताल **विभूति बिक्रम नाथ**	109
19.	पर्वतीय अंचल के कवियों में प्रकृति–बोध **श्रीमती दीप्ति श्रीवास्तव**	115
20.	वर्तमान साहित्य में दलित चिंतन **डॉ. पुष्पा रानी**	123
21.	प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय संवेदना **डॉ. ऋचा मिश्रा**	127
22.	नारी शक्ति – एक विमर्श **प्रो. डॉ. सुधा सिन्हा**	133
23.	स्त्री विमर्श : विविध आयाम **शिवानी शर्मा**	137
24.	हिन्दी साहित्य की विकास–यात्रा में पर्यावरण **डॉ. जे. पी. त्यागी, पूजा शाह**	142
25.	आधुनिक कवियों की दृष्टि में पर्यावरण **शाहिद हुसैन, डॉ. श्रद्धा हिरकने**	148
26.	दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर **बाल किशोर राम भगत**	155
27.	सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में नारी **डॉ. श्रद्धा चन्द्राकर, लक्ष्मीन चौहान**	161

20

वर्तमान साहित्य में दलित चिंतन

-डॉ. पुष्पा रानी

कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य से उस समय की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिस्थितियाँ जुड़ी होती हैं। जो साहित्य अपने समय की समस्याओं को समाहित नहीं कर पाता वह सच्चे अर्थों में साहित्य कहलाने के लायक नहीं है। यदि हम भारत वर्ष के इतिहास को खंगालते है, तो हर युग में दलित पीड़ित, शोषित, संघर्ष करता रहा है। क्यों, यह विचारणीय प्रश्न है? क्या हर युग में इसका जन्म शोषित व पीड़ित होने के लिए ही हुआ है। सतयुग में, केवट, शबरी, धोबी, भील, सभी सेवा के कार्यों में तत्पर रहते थे। शिक्षा से वंचित, दूसरों की दया का पात्र बने रहे। द्वापर युग में एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा स्थापित कर धनुष विद्या तो सीख ली। मगर अर्जुन से श्रेष्ठ धनुर्धर होने कीमत अपना अंगूठा काटकर गुरु द्रोणाचार्य के चरणों पर अर्पित कर चुकाई।

लेकिन कलयुग में स्थिति बद से बदतर होती चली गई। रैदास, ज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, काशी राम, मायावती, कबीर, नाभादास, दादू, नामदेव ढसाल, दया पवार, लक्ष्मण गायकवाड़ आदि ने आवाज उठाई, सन्तों ने खुलकर समाज पर प्रहार किया, तब जाकर समाज में जागृति का सूत्रपात हुआ। कवयित्री सहजोबाई दलित वर्ग के प्रति अपना चिंतन इन शब्दों में व्यक्त करती हुई कहती हैं–

> **"बड़ी न जाने पाइहै, साहिब के दरबार।**
> **द्वारे ही सो लागे है, सहजो मोटी मार।"[1]**

वर्तमान साहित्य में दलित चिंतन, दलित साहित्यकारों व गैर दलितों ने भी साहित्य रचना की है। साहित्य की सभी विधाओं में दलित चिंतन प्रमुख रूप से उभरा है। काव्य के क्षेत्र में जनकवि बिहारीलाल हरित, डॉ. श्याम सिंह शशि, डॉ. सुखवीर सिंह, डॉ. धर्मवीर ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि के नाम उल्लेखनीय

Published by:

P.K. Publishers & Distributors
J-231/1A, Gali No. 14, 4th Pushta,
Kartar Nagar, Delhi-110053
Mobile: +91 95404-83251, +91 79825-51449
E-mail: pkpublication@gmail.com
Website: www.pkpublishers.com

सामाजिक विज्ञान, भाषा और शिक्षा में बहु विषयक दृष्टिकोण

© Authors

Edition: First, 2023

ISBN: 978-93-92239-92-2

All rights reserved no part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Publisher.

This Book has been published in good faith that the material provided by author is original. Every effort is made to ensure accuracy of material but the publisher and printer will not be held responsible for any inadvertent errors.

Printed in India

Published by P.K. Pubishers & Distributors, Delhi-53, Laser Typeset by Gurpal Computers (*Amandeep Singh*), Nawanshahr, Punjab. Printed at Sachin Printers, Delhi-53.

10

आधुनिक हिंदी साहित्य में किसान विमर्श

डॉ पुष्पा रानी
हिन्दी विभागाध्यक्ष, असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, तलवाड़ी चमोली, उत्तराखंड।
Email: ranimourya72@gmail.com

सारांश

भारत की अधिकांश जनता ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। ग्रामीण क्षेत्रों की जनता की जीविका का प्रमुख साधन कृषि है। किसान खेती से न केवल स्वयं की जीविका उपार्जन करता है, बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष के लिए अन्न उत्पन्न करता है। हमारे घरों का चूल्हा किसान की मेहनत और पसीने से जलता है। मगर संपूर्ण भारतवर्ष का पालन- पोषण करने वाला वहीं, किसान स्वयं अभाव, विपन्नता, कष्टों, सरकारी नीति, कालाबाजारी, औद्योगिकरण, शहरीकरण और बाजारवाद की मार झेलता है। बिचौलियों व मुनाफाखोरों के कारण उसका जीवन हमेशा अभाव व कष्टों से परिपूर्ण रहा है। आज महाजन नहीं है, मगर आज भी किसान कर्ज में डूबा है। प्राकृतिक आपदा , अतिवृष्टि, सूखा, बाढ़,बंदर ,भालू, जंगली सूअर, माहे, नीलगाय ,हाथी आदि किसान की फसल नष्ट करने के आधुनिक हथियार है। इन सभी कारणों से जब किसान की फसल नष्ट हो जाती है, तो आए दिन समाचार पत्रों में किसान की आत्महत्या की खबरें छपती हैं।

साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। समाज का एक महत्वपूर्ण अंग जब अभावों, शोषण व कष्टों से पीड़ित होगा, तो उस की जीवन गाथा उसी साहित्य में प्रतिबिंबित होगी। साहित्य में भारतीय किसानों की जो दयनीय दशा है। उसका अत्यंत मार्मिक, सजीव व यथार्थ चित्रण हिंदी साहित्य में उपलब्ध है। साहित्य की चाहे कोई भी विधा हो, गद्य- पद्य सभी ने किसान के अभावों व विपन्नता को चित्रित किया है। आधुनिक हिंदी कविता में किसानों के दुख- दर्द का

सामाजिक विज्ञान, भाषा और शिक्षा में बहु विषयक दृष्टिकोण

संपादक-मंडल
डॉ. हरीश कुमार यादव
डॉ. दीपा मुद्धेशिया
विनीत कुमार

P.K. Publishers & Distributors
Delhi - 110053 (India)

© संपादक

पहला संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-90868-03-2

नमन प्रकाशन
4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोन: 8750551515, 8595352540

श्री नितिन गर्ग द्वारा नमन प्रकाशन के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

Adhunik Hindi Kavita Mein Rashtriya Chetna
By Ed. Madhuri Garg

20.
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. पुष्पा रानी
हिंदी विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय तलवारी चमोली (उत्तराखंड)
मो.-8477966034

सारांशः-

बीसवीं सदी के सिद्धहस्त कवि और बहुमुखी प्रतिभा के धनी सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचनाओं में जैसी विविधता, व्यापकता और समग्रता देखने को मिलती है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। निराला के काव्य में एक और छायावाद की प्रवृत्तियों के अनुरूप कल्पना, रहस्य-रोमांच और प्रकृति का सुंदर चित्रण है, तो दूसरी और राष्ट्र के प्रति एक समर्पित साहित्यिक का जीवन-दर्शन है। आधुनिक चेतना के विद्रोही स्वरों की सबसे अधिक और सार्वधिक समर्थ अभिव्यक्ति निराला के काव्य में है। निराला के काव्य में देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना ओज के साथ उमड़कर आई हैं।

मूल बिंदुः-सांस्कृतिक नवजागरण अतीत का गौरवगान और राष्ट्रीय वंदन हिंदी कविता के छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला माने जाते हैं।[1] वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में माघ शुक्ल 21 फरवरी सन्